WWW.HINDICOMICS.CO.NR

राज
कॉमिक्स
मूल्य 8.00 307

बांकेलाल देवलोक में

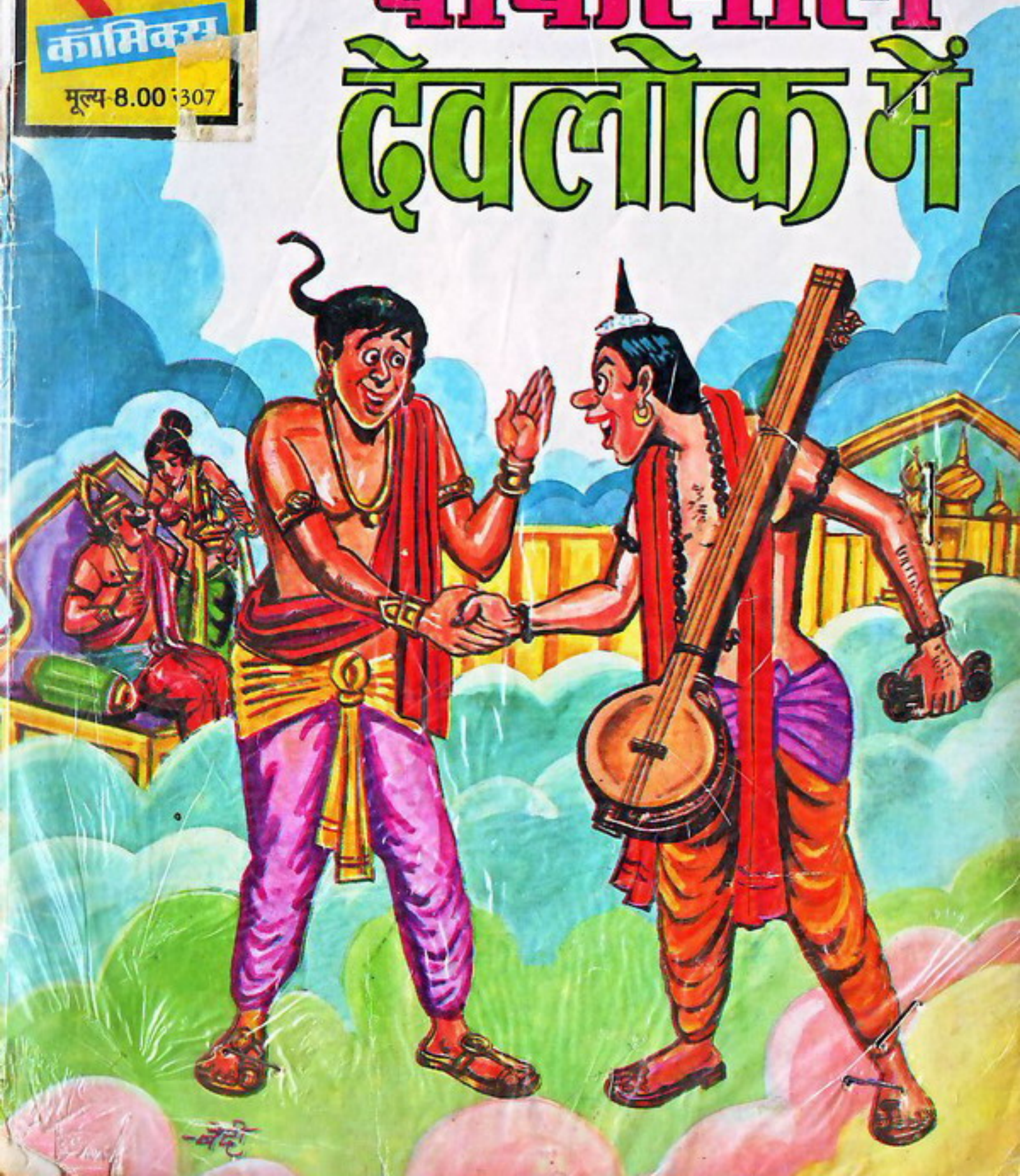

बांकेलाल देवलोक में

चित्रांकन : बेदी लेखक : तरुण कुमार वाही संपादक : मनीष चंद्र गुप्त

© RAJA POCKET BOOKS

ही-ही-ही ! महाराज ! ये मुकुट-वुकुट तो आपके (नौकै जैसे) सिर पर ही अच्छे लगते हैं। मैं तो ऐसे ही भला !
वुईईईई ! ईश्वर करे अगली बार ये बने कुकड़ूं-कूं मुर्गा, और मैंबलूं कसाई।
कुकड़ूं... कूं
ही-ही-ही ! भूनकर खाऊंगा तुझे तो मैं।
इधर आसमान से टपका मुकुट सीधा गिरा असुरलोक में विश्राम कर रहे असुरघुम्बी पर –
तड़ाक
उई ! य...ये क्या गिरा मुझ पर
और उस वस्तु पर निगाहें पड़ते ही असुरघुम्बी उछल पड़ा खुशी से –
य... ये तो देव-मुकुट है !?
चाहू sss
बन गया मेरा काम। मजे आ गए मेरे तो। ही-ही-ही।

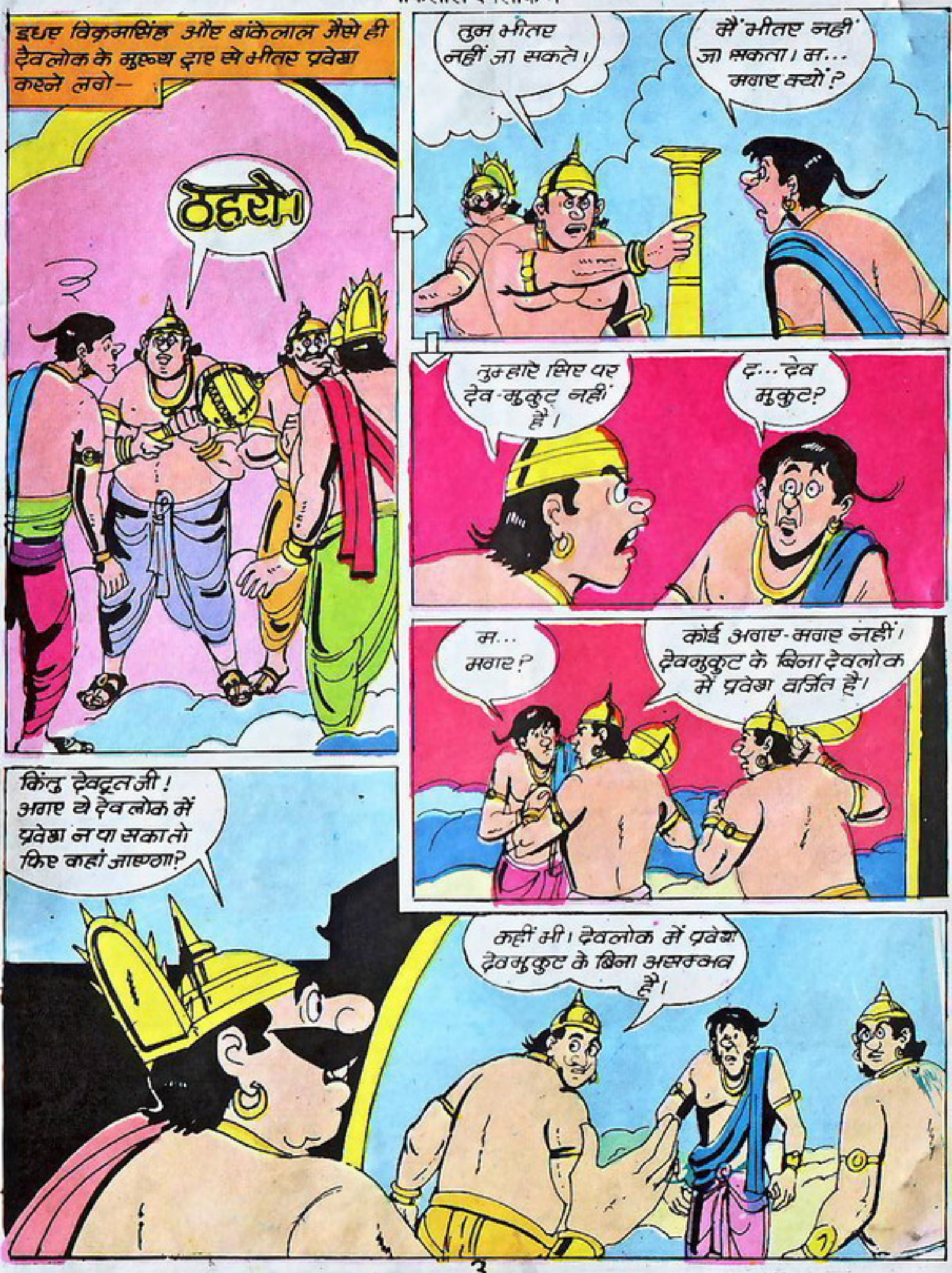
इधर विक्रमसिंह और बांकेलाल जैसे ही देवलोक के मुख्य द्वार से भीतर प्रवेश करने लगे—
ठहरो।
तुम भीतर नहीं जा सकते।
मैं भीतर नहीं जा सकता। म... मगर क्यों?
तुम्हारे सिर पर देव-मुकुट नहीं है।
द... देव मुकुट?
म... मगर?
कोई अगर-मगर नहीं। देवमुकुट के बिना देवलोक में प्रवेश वर्जित है।
किंतु देवदूत जी! अगर ये देवलोक में प्रवेश न पा सका तो फिर कहां जाएगा?
कहीं भी। देवलोक में प्रवेश देवमुकुट के बिना असम्भव है।

मगर मैं अपने प्यारे बांकेलाल के बिना कैसे रहूंगा? बहूहूहू।
ये सब इसी मुच्छड़ सिंह के कारण हुआ है। न ये मुझे कलगी वाला मुर्गा कहता और न मैं खुंदक में आकर अपना मुकुट फेंकता। बहूहूहू।
बांकेलाल! अगर तुम देवलोक में नहीं रहोगे, तो फिर मैं भी नहीं रहूंगा।
ऐसा मत कहें महाराज!
आप देवलोक में जाएं। मैं शीघ्र ही अपना देवमुकुट ढूंढकर देवलोक पहुंच जाऊंगा।
किंतु बांकेलाल...?
पर बांकेलाल ने विक्रमसिंह की एक न सुनी।
हाय रे, बांकेलाल! ये तुने क्या किया? देवमुकुट अब न जाने कहां होगा?
बांकेलाल को देवलोक में नहीं घुसने दिया?
??

अगर सम्पूर्ण देवलोक को हिलाकर न रख दिया तो बांकेलाल नाम नहीं मेरा।
ये बांकेलाल तो देवर्षि नारद का भी गुरु लगता है।
हां, इस पर नजर रखनी होगी।
लेकिन उसके लिए सर्वप्रथम मुझे देवलोक में प्रवेश करना होगा।
अचानक चौंक पड़ा बांकेलाल—
अरे! देवलोक का एक और प्रवेश द्वार।
वहां तो देवदूत भी खड़े दिखाई नहीं पड़ रहे।
चल बेटा बांकेलाल! हो ले भीतर। ही ही ही
भीतर प्रवेश करते ही बांकेलाल को सुनाई पड़ी एक कर्कश हंसी—
ही ही ही
हांय! ये हंसी की आवाज तो कुछ जानी-पहचानी सी लगती है।
कौन आ गया मेरी जान-पहचान का।

* ड्रेगन के बारे में जानने के लिए पढ़ें--बांकेलाल का पूर्व प्रकाशित कॉमिक्स, 'बांकेलाल और स्वर्ग की मुसीबत'

भागो!
फिर भागा। और तेज उड़ूं। नहीं तो ये फिर निकल जायेगा।
बापरे, जान बची। ये नरकलोक से आगे नहीं बढ़ेगा।
फिर निकल गया कम्बख्त! ख्वैर, कभी तो जबड़े में फंसेगा ये मेरे।
बेचारा बांकेलाल।
बहहहह! कैसे प्रवेश पाऊं देवलोक में!
बांकेलाल बेटे! निकाल अपनी शानदार खोपड़ी से कोई तरकीब।
और इसी के साथ खुल गयी बांकेलाल की तीसरी आंख –
होऽऽऽ जयजय शिवशंकर! कांटा लगे न कंकर
दुरूड़ऽऽऽ दुरूड़ऽऽऽ
भगवान शंकर की सवारी!!
दुरूड़ऽऽऽ दुरूड़ऽऽऽ
होऽऽ चले भोले बाबा, हांके बैलें ये सवारऽऽऽ

होऽऽ डमरू वाले बाबा
चलेऽऽ भांग चढ़ाई केऽऽऽ
भभूति लगाई केऽऽ
बांऽऽ

इसी के साथ ही खुल गए बांके लाल के मस्तिष्क के सभी खिड़की, दरवाजे—
वो मारा पापड़ वाले को!
आखिर खुल ही गई मुझे देवलोक में प्रवेश करने की तरकीब।

भगवान शंकर की सवारी उनके सेवकों यानि इन भूत-पिशाचों के साथ देवलोक की ओर जा रही है।
अगर मैं भी इन भूत-पिशाचों की मण्डली में शामिल हो जाऊं तो द्वार पर खड़े देवदूतों को बिल्कुल भी पता नहीं चलेगा। ही ही ही।

अब देखता हूं मुझे कौन रोकेगा देवलोक में प्रवेश करने से।...
...इस काले बादल की कालिख...

...मुंह पर लगाकर अब मैं भी पिशाच दिखाई पड़ूंगा।
हू हू हू हा हाहा हा

बांकेलाल सब की निगाहें बचाकर भगवान शंकर की मण्डली में शामिल हो गया—
हो ऽऽ डमरू वाले शंकर चले ऽऽ ब्याह रचाने ऽऽऽ
आएं! ब्याह रचाने! कहीं पार्वती ने सुन लिया तो---?
न जाने किस दूत की शक्ल थी ये। ओह! बांकेलाल। ये कब शामिल हो गया मेरी मण्डली में।
भगवान शंकर को माजरा समझते देर न लगी—
ओह! तो यह बात है। देवलोक में प्रवेश करने के लिए बांकेलाल ने ये चाल चली है। हुम्म।
और फिर देवलोक के मुख्य द्वार तक पहुंचते-पहुंचते भगवान शंकर अपने दूतों सहित हो गए गायब—
हो ऽऽ डमरू वाले बाबा चले पालकी उठाए के...भभूति लगाई के।
वाह! कुछ ही देर में अब होऊंगा देवलोक के अंदर।

हो ऽऽ जय जय शिवशंकर ऽऽऽ कांटा लगे न कंकर ऽऽ
धड़
ये क्या लगा मुझे। आह, मर गया मैं।
अपनी आंखें बन्द करके हमें भी सूरदास समझ लिया था क्या?
बिना देवमुकुट के देवलोक में घुसना चाहता था?
म... मगर मैं तो...
भगवान शंकर की सवारी कहां गई? बूहूहू हू!
खबरदार बांकेलाल! अब अगर तुमने तीसरी बार बिना देवमुकुट के देवलोक में घुसने की चेष्टा की तो हम तुम्हें नरकलोक भेजने पर विवश हो जायेंगे।
नरकलोक में? नहीं-नहीं। नहीं करूंगा चेष्टा देवलोक में प्रवेश की। बहहहह!
अब क्या करूं? उधर देवलोक में अप्सराओं के नृत्य का आनन्द उड़ा रहा होगा वो मोटा मुटदाड़ और मैं यहां पड़ा अप्सरा को देखने के लिए भी तरस गया। बहहहह!

उधर विक्रमसिंह—
मधुबन में राधिका नाचे रे।
वाह! क्या नृत्य है?
काश! मेरा प्यारा बांकेलाल भी यहां होता तो नृत्य का आनन्द ही कुछ और होता। (हिच्च)
सुन्दरी। थोड़ा सोमरस और दो। बांके लाल के बिना सब कुछ फीका है।
इन्द्र के दरबार में आकर देव सब कुछ भूलकर केवल अप्सराओं में खो जाते हैं। ये विक्रमसिंह बार-बार बांके लाल का नाम लेकर मेरा अपमान कर रहा है।
और लीजिए देव विक्रमसिंह!
हां, हां, लाओ लोग कहते हैं (हिच्च) मैं शराबी हूं...
इसे इतना सोमरस पिलाऊंगी कि ये बांके तो क्या, अपना नाम भी भूल जायेगा।

उधर बांकेलाल –
यहां से नीचे तो कुछ दिखाई नहीं पड़ता, सिवाय बादलों के।
नजाने मेरा देव मुकुट कहां जाकर गिरा होगा।
तभी –
नारायण! नारायण!
??
प्रणाम देवर्षि नारद!
देव बांकेलाल किस चिंता में डूबे हो?
तब बताई बांकेलाल ने अपनी समस्या।
ओह! यह बात है! व्यथित मत हो बांकेलाल! तुम्हें देवलोक में प्रवेश दिलाने का जिम्मा मेरा। मुझे बिना मुकुट ही देवलोक में कहीं भी आने-जाने की छूट प्राप्त है।
क्या सच देव मुनि नारद?
आखिर चुटिया वाला चुटिया वाले के काम आया।
ये लो नारद मुद्रिका। इसे अपनी कनिष्का में पहन लो और फिर देखो इस मुद्रिका का कमाल।
??
बांके ने जैसे ही मुद्रिका पहनी –
अरे! यह क्या?

मैं तो स्वयं नारद बन गया। वाह! नारायण... नारायण!
अब घुमाई बांकेलाल ने निगाहें –
म... मगर ये नारद जी कहां गए?
हे नारद जी! आप कहां हैं?
बांकेलाल!
मैं तुम्हारे सामने ही खड़ा हूं। किंतु मैं तबतक अदृश्य रहूंगा जबतक तुम नारद मुद्रिका मुझ तक नहीं पहुंचा देते।
देवलोक में प्रवेश करने के पश्चात तुम नारद मुद्रिका को वायु में उछाल देना। मुद्रिका मुझ तक पहुंच जायेगी।
बहुत अच्छा देवर्षि! अब मुझे आज्ञा दीजिए ताकि मैं जल्दी से जल्दी देवलोक में प्रवेश करने के बाद आप की मुद्रिका आप तक पहुंचा सकूं।
शीघ्र जाओ बांकेलाल...

कलह भोजी नारद भी कहां कम थे बांके से –
और यह बात मत भूलना कि देवताओं ने देवलोक में तुम्हें प्रवेश करने से रोककर तुम्हारा अपमान किया है।
यह बात मैं कैसे भूल सकता हूं। देवर्षि नारद!
बांकेलाल पहुंचा देवलोक के मुख्य द्वार पर–
ओह! देवर्षि नारद! आपका स्वागत है मुनिवर!
नारायण... नारायण।
बांकेलाल पहुंचा देवलोक में –
हीहीहीही! आखिर मैं देवलोक में आ ही गया। अब देवर्षि नारद की अंगूठी वायु में उड़ाना...
...ताकि बेचारे नारदजी पुन: प्रकट हो सकें।
लेकिन तभी बांकेलाल की शैतान खोपड़ी में समा गई शैतानी –
बांकेलाल! यह क्या कर रहा है तू? नारद मुद्रिका अंगुली से निकली नहीं कि तू पुन: बांके बना नहीं।...
...फिर देवमुकुट भी तेरे पास नहीं है। अगर किसी ने फिर तुझे देवलोक से बाहर निकाल दिया तो?

ओहबात तो यह ठीक है।
अब चाल तो चलेगा तू और नाम होगा बेचारे नारद जी का। ही ही ही ही।
अब आयेगा खेल का असली मजा।
उधर विक्रमसिंह मदिरा के नशे में चूर होकर पहुंच गया देवराज इन्द्र के सामने -
बांके लाल!
अरे, मेरा प्यारा बांकेलाल तो यहां है। (हिच्च)
पुच्च
मेरे प्यारे बांकेलाल (हिच्च) तू कहां चला गया था मुझे छोड़ कर।
??
ही ही ही! लगता है देव, विक्रमसिंह को ज्यादा चढ़ गई है।
सुरा-सुन्दरी! इन्हें अब विश्राम की आवश्यकता है। इन्हें विश्रामालय ले जाओ।
नहीं। मैं नहीं जाता अपने बांके को छोड़ के। हिच्च

दुदुम्भकर के विषय में जानने के लिए पढ़ें- बांकेलाल का एक और मनोरंजक कॉमिक्स 'बांकेलाल और स्वर्ग की मुसीबत'

किंतु अब हाहाकारी देवलोक में प्रवेश करेगा। और उठा लायेगा देवराज इन्द्र की पुत्री इन्द्रजा को।
तब आना होगा इन्द्र को यहां, जहां दुदुम्भकर की इस प्रतिमा के सामने मैं करूंगा उसका वध। हा हा हा।
ये पहना मैंने देवमुकुट।...
... और ये बना मेरे देवलोक जाने का रास्ता हा हा हा।...
... ये चला मैं देवलोक! इन्द्रजा को लाने। हूहूहू हा हा हा!

उधर बांकेलाल अभी उद्यान से ही गुजर रहा था कि –
ओह! इन्द्र के दरबार की अप्सराएं।
सखी उर्वशी! काश! हम पृथ्वी की सैर कर पाते।
आपके पिताश्री देवराज इन्द्र का सख्त आदेश है कि पृथ्वी की चर्चा भी आप मत करें...
... क्योंकि पृथ्वीलोक जाने के लिए जिस मार्ग से होकर गुजरना पड़ता है। वह असुरलोक से होकर गुजरता है।
इधर बांकेलाल की खोपड़ी उगल रही थी देवलोक को हिलाने की एक शानदार योजना।
अगर मैं इन्द्रजा को गायब कर दूं तो सम्पूर्ण देवलोक ही हिल उठेगा।
तब पता चलेगी देवराज इन्द्र को भी बांकेलाल की ताकत। ही ही ही।

और फिर –

नारायण नारायण

प्रणाम देवर्षि !

क्या बात है बालिके इन्द्रजा ! चित उदास दिखाई पड़ रहा है।

देवर्षि ! इन्द्रजा पृथ्वी की सैर करना चाहती है।...

...किंतु इसके लिए पिता श्री का सख्त आदेश है कि...

नारायण...नारायण अगर हम तुम्हारी ये इच्छा पूर्ण कर दें बालिके इन्द्रजा ?

क्या सच देवर्षि नारद ! अगर ऐसा हो गया तो मैं आपकी ये कृपा सदा याद रखूंगी।

तब फिर तुम शीघ्र ही दोनों एक-दूसरे से वस्त्र बदल लो। नारायण... नारायण !

जो आज्ञा मुनिवर !

उर्वशी ने पहन लिए इन्द्रजा के वस्त्र और इन्द्रजा ने पहन लिए उर्वशी के वस्त्र।

कल प्रात: तक तुम्हें इन्हीं वस्त्रों में इन्द्रजा के कक्ष में ही रहना है सुन्दरी उर्वशी !

ओह ! मैं समझ गई मुनिवर !

बांके ले चला इन्द्रजा को–
किंतु मुनिवर! कल प्रातः सूर्योदय से पूर्व ही आप इन्द्रजा को यहां ले आयें, अन्यथा मैं संकट में पड़ जाऊंगी।
चिंता मत करो सुन्दरी उर्वशी! नारायण... नारायण।
क्या ये रास्ता पृथ्वीलोक को जाता है देवर्षि नारद?
इन्द्रजा को बंदी बनाने के लिए यह स्थान अति उत्तम लगा है मुझे।
अभी तुम खुद देख लेना इन्द्रजा!
जैसे ही दोनों ने देवलोक की उस गुफा के भीतर प्रवेश किया।
ये मूर्छान औषधि तुम्हें पल में मूर्छित कर देगी।
आह!
अब आयेगा असली मजा। ही ही ही!
अंगुली से नारद मुद्रिका उतारते ही बांके अपने स्वरूप में लौट आया–
और! ये उड़ाली अब मैंने वापु में नारद मुद्रिका।
ये किया मैंने चट्टान से गुफा का मुंह बन्द।

उधर देवलोक के बाहर खड़े नारद मुनि –
ओह! बांकेलाल ने वायदे के अनुसार नारद-मुद्रिका मुझे लौटा दी है।
अब जरा देवलोक की खुबर ली जाए।
उधर रात्रि के अंधकार का लाभ उठाता हाहाकारी –
हा हा हा। यही है वो झरोखा, जहां से ले जाऊंगा मैं इन्द्रजा को।
सोई है। हा हा हा! अब असुरलोक में ही जाओगी।
ये है सुदर्शन औषधि। ही ही ही।
खुईईई

चल। अब तुझे असुरलोक की सैर कराऊँगा ये हाहाकारी।

हाहा हा! असुरराज हाहाकारी की मुट्ठी में बन्द हैं अब इन्द्र के प्राण। इस देवमुकुट ने तो कमाल ही कर दिया।
असुरराज हाहाकारी!

इसका मतलब ये देवमुकुट असुरराज हाहाकारी के हाथ लग गया है।
मुझे ये मुकुट किसी भी तरह हासिल करना होगा।...

... देवमुकुट? ओह! कहीं ये वही देवमुकुट तो नहीं जिसे मैंने फेंक दिया था।

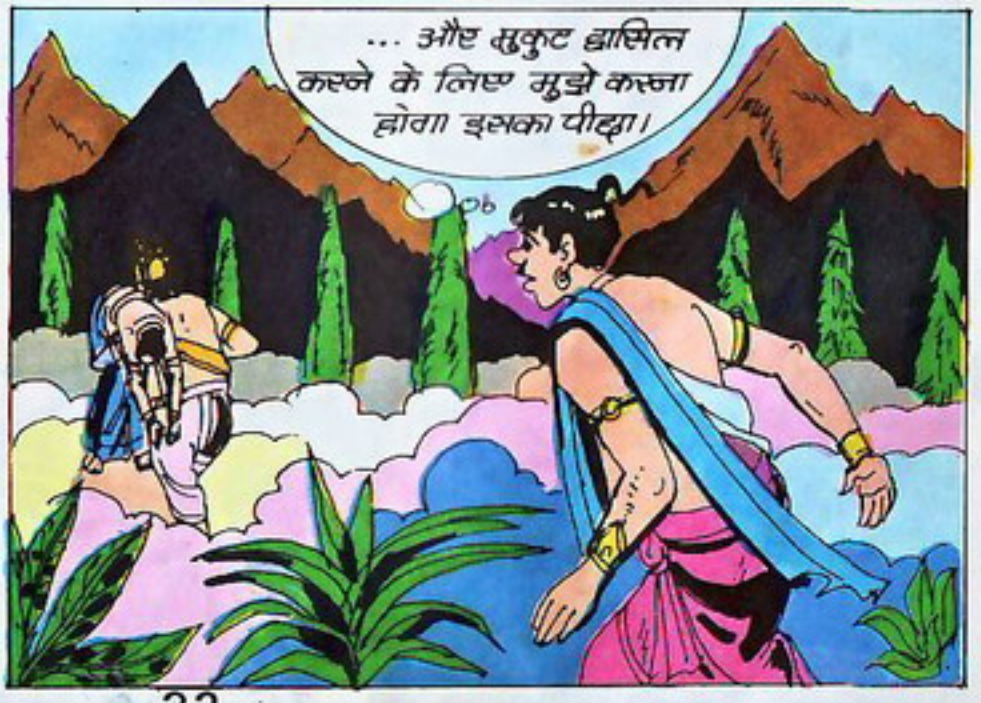
... और मुकुट हासिल करने के लिए मुझे करना होगा इसका पीछा।

अगली सुबह देवलोक में हंगामा मच गया –
इंद्रजा अपने कक्ष से गायब है।
क्या? इंद्रजा गायब है।
और इंद्रजा की मुंह लगी सखी उर्वशी का भी कुछ पता नहीं है।
देवराज इन्द्र यह समाचार सुनकर सकते में आ गए –
क्या? मेरी पुत्री इंद्रजा और उर्वशी देवलोक से गायब हैं।
मेरा प्यारा बांकेलाल! तू छिपा है कहां?(हिच्च)
देवराज इन्द्र! गजब हो गया। देवलोक द्वार पर तैनात दोनों देवदूत घायल व मूर्च्छित पड़े मिले हैं।
अश्विनी कुमार उन्हें होश में लाने का प्रयास कर रहे हैं।
ओह! कहीं यह कार्य असुरों का तो नहीं।
हिच्च! थोड़ा सोमरस और डालो सुरा सुन्दरी।
तभी गूंज उठे स्वर नारायण नारायण के।

देवर्षि नारद!
देवराज इन्द्र! देवलोक में खलबली सी मची लग रही है। सब कुशल मंगल तो है न?
अरे! ये चोटी वाला कौन है। (हिच्च)
इन्द्र ने दुखी मन से नारद को सब कुछ कह सुनाया –
नारायण-नारायण! इसका मतलब बांकेलाल का देवमुकुट अवश्य ही असुरों के हाथ लग गया है और...
बांकेलाल!
उफ। ये आपके बांकेलाल नहीं, बल्कि देवर्षि नारद हैं देव विक्रमसिंह!
देवमुनि नारद! ओह हिच्च, सुराप्रसुन्दरी। और डालो सोमरस। हम और पीयेंगे। मुझको देवताओं माफ करना, मैं नशे में हूं। ब हहहह
ये चुटियाधारी मेरे प्यारे बांकेलाल के अलावा और कोई नहीं हो सकता। (हिच्च)
ओह! चढ़ गई है इसे बहुत ज्यादा।
तब नारदमुनि ने बांकेलाल की देवलोक प्रवेश की कथा कह सुनाई –
ओह! किंतु फिर बांकेलाल कहां है?
नारायण... नारायण!
तब देवराज इन्द्र ने देवदूतों को दिया बांकेलाल को ढूंढने का आदेश।

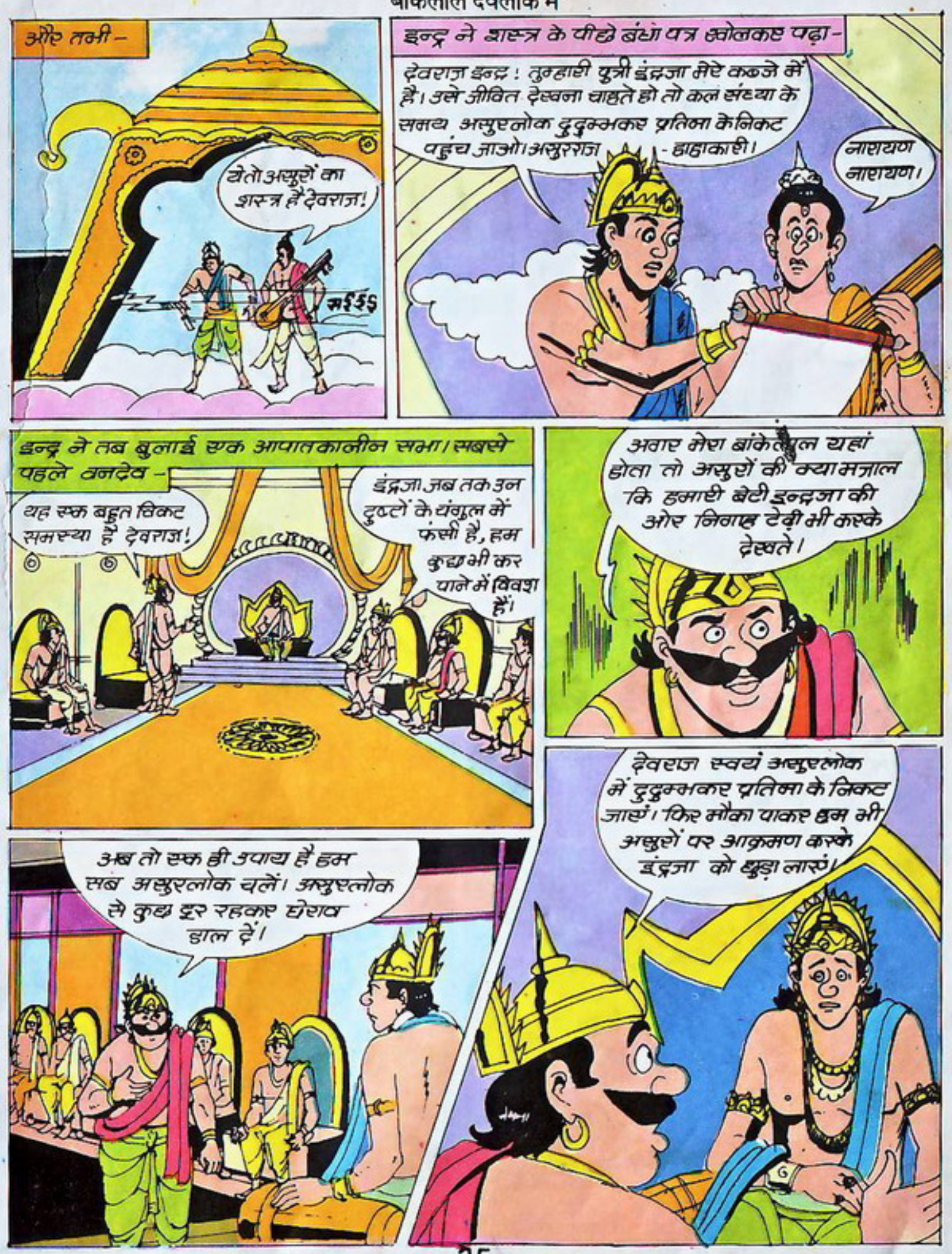
और तभी –
ये तो असुरों का शस्त्र है देवराज!
इन्द्र ने शस्त्र के पीछे बंधा पत्र खोलकर पढ़ा –
देवराज इन्द्र ! तुम्हारी पुत्री इंद्रजा मेरे कब्जे में है। उसे जीवित देखना चाहते हो तो कल संध्या के समय असुरलोक दुदुम्भकर प्रतिमा के निकट पहुंच जाओ। असुरराज - हाहाकारी।
नारायण नारायण।
इन्द्र ने तब बुलाई एक आपातकालीन सभा। सबसे पहले वनदेव –
यह एक बहुत विकट समस्या है देवराज!
इंद्रजा जब तक उन दुष्टों के चंगुल में फंसी है, हम कुछ भी कर पाने में विवश हैं।
अगर मेरा बांकेलाल यहां होता तो असुरों की क्या मजाल कि हमारी बेटी इन्द्रजा की ओर निगाह टेढ़ी भी करके देखते।
अब तो एक ही उपाय है हम सब असुरलोक चलें। असुरलोक से कुछ दूर रहकर घेराव डाल दें।
देवराज स्वयं असुरलोक में दुदुम्भकर प्रतिमा के निकट जाएं। फिर मौका पाकर हम भी असुरों पर आक्रमण करके इंद्रजा को छुड़ा लाएं।

यही उचित होगा देवराज!
हुअं!
और फिर चल पड़े सभी देवता असुरलोक की ओर-
असुरराज हाहाकारी अब मरेगा तू भी।
न जाने मेरा बांकेलाल देवलोक के बाहर कहां-कहां भटक रहा होगा।
उधर असुरलोक की एक गुफा में-
हा हा हा इंद्रजा यहीं कैद रहेगी!
तुम दोनों इसका ध्यान रखना। भागने न पाए।
जो आज्ञा असुरराज!
असुरराज हाहाकारी के जाते ही-
वह मुकुट भी गुफा में ही कहीं होना चाहिए।
बांकेलाल पहुंचा गुफा की छत पर-
ये चट्टान इन दोनों का मलीदा बना देगी।
गड़...गड़

यह स्वर कैसा था?
आह!!!
हाय मरा।
अगर वह मुकुट मुझे मिल गया तो देवलोक में कहीं भी आने-जाने की आजादी होगी मुझे।
मिल गया। ये रहा मुकुट तो?
बांकेलाल ने मुकुट धारण किया और –
पर ये तो शायद उर्वशी है! इसे असुर-राज क्यों उठा लाया है?
इसे भी साथ ले चलता हूं। जब यह सबको बतायेगी कि इसने नारद के साथ इंद्रजा को भेजा था... तो मुझ पर कोई शक नहीं करेगा। और मेरी बला टलेगी देवर्षि नारद के सिर। ही ही ही।
आह! मैं कहां हूं।

उधर इंद्र अकेले ही आ पहुंचे दुदुम्भकर प्रतिमा के निकट –
आओ इन्द्र! हाहाहाहा आज मैंने तुम्हें यहां आने पर विवश कर ही दिया।
दुष्ट हाहाकारी। कहां है मेरी पुत्री?
तेरी मृत्यु से पूर्व तुझे एक बार तेरी बेटी के दर्शन अवश्य करवाऊंगा मैं इन्द्र!
असुरखुम्बी जाओ। इंद्रजा को लेकर आओ।
जो आज्ञा असुरराज!
लेकिन थोड़ी ही देर में असुरखुम्बी घबराया सा लौटा –
तजब हो गया असुरराज इंद्रजा कैद से निकल भागी है।
क्या?
मेरी पुत्री कैद से निकल भागी। वाह
उधर देवताओं की सेना इन्द्र के संकेत की प्रतीक्षा कर रही थी कि तभी –
बांकेलाल! ये तो मेरा बांकेलाल ही है।
इसके साथ तो उर्वशी है।
देवताओं की भीड़ नारदमुनि भी हैं साथ। चक्कर क्या है?
?
बेटे बांके! लगता है तेरी पोल खुल चुकी है। और ये सब देवता तुझे ही ढूंढ़ रहे हैं।
अवश्य ही नारद मुनि ने सारा रहस्य खोल डाला है और ये उस गुफा तक पहुंच गए हैं जहां मैंने... उफ!

बांकेलाल अभी वहां से फरार होने की सोच ही रहा था कि –
बांकेलाल! ओह! देवमुकुट मैं जानता था कि बांकेलाल कि तुम एक दिन देवमुकुट अवश्य ढूंढ़ लोगे।
तभी सब देवता भी निकट आ गए।
उर्वशी! इंद्रजा कहां है?
इंद्रजा को तो स्वयं नारदमुनि पृथ्वीलोक भ्रमण के लिए ले गये थे।
मैं?
मर गए।
जबकि नारद को समझते देर न लगी–
ओह! इसका मतलब बांकेलाल ही इंद्रजा को कहीं ले गया है?
बांकेलाल! इंद्रजा कहां है?
व...वह...(अब झूठ बोला तो सीधा नरक जाना पड़ेगा। बहहहह) देवर्षि नारद! इंद्रजा देवलोक में ही सुरक्षित है।
??
इतना सुनते ही –
इसका मतलब इन्द्रजा के धोखे में हाहाकारी उर्वशी को उठा ले गया था।
और अब उर्वशी को भी बांकेलाल कैद से निकाल लाया है।
हमें तुरन्त देवराज इन्द्र की मदद के लिए चलना चाहिए।

असुरलोक को चारों ओर से घेर कर आक्रमण कर दिया देवताओं ने—
मारो मारो
इधर इन्द्र
इन्द्र के हाथों से नहीं बचेगा तू हाहाकारी
सब गड़बड़ हो गई।
इसी पल देवताओं ने असुरों पर आक्रमण कर दिया—
मारो मारो!
असुरराज हाहाकारी और इन्द्र के शस्त्र आपस में टकरा गए—
तड़ाक
छिड़ गया भयानक संग्राम।
किंतु शीघ्र ही
इन्द्र का वज्र तेरी मौत बनेगा दुष्ट हाहाकारी।
और गूंज उठी हाहाकारी की चीख—
आईऽऽऽ
खच्च

देवता हर्षोल्लास से चीख पड़े—
विजय!
फिर स्वयं नारद ने कह सुनाई सारी कथा इन्द्र को।
इंद्रजा को गुफा की कैद से स्वतन्त्र करना पड़ा बांकेलाल को—
बूहूहूहू! अगर मुझे पता होता कि हाहाकारी इन्द्रजा का अपहरण करने वाला है तो मैं भला क्यूं यह कार्य करता।
मेरी पुत्री!
पिताश्री!
तब विक्रमसिंह ने पूछा—
किंतु बांकेलाल! तुम्हें हाहाकारी की योजना का पता कैसे लगा?
और हमेशा की तरह—
ये सब भगवान् शंकर की कृपा से सम्भव हुआ महाराज! अगर वे मेरे स्वप्न में आकर मुझे हाहाकारी की योजना के विषय में न बताते तो...
बहूहूहू! डूब गई फिर लुटिया मेरी।
फिर—
मेरा प्यारा बांकेलाल! मैं कहता था न देवराज इन्द्र की जहां बांकेलाल है, वहां किसी दुष्ट की दाल नहीं गल सकती।
बहू हूहू!
ठीक तभी दोनों हो गए गायब—
नहीं! यह तो हम अभी नहीं बतायेंगे। अगले सेट का इंतजार तो आपको करना ही होगा पाठको। ही ही ही।
अरे! ये दोनों कहां गायब हो गए?
समाप्त